७ उं जा

किनिकां । ३१ १ हे जून, ३५ १७ श्रु ज्या

३ वर्भ मश्थान

विकाशना সহচর

न् ज्य माञ्चाहिक मः वाम পতा)

আগামী ও রা আধাত নোমবার হইতে প্রকাশিত इइट्रा

छीयुङ वावू विश्वमान वत्न्याशाशाश मामश्रकान পরিত্যাগ করিয়া, সহচরের সম্পাদক হইলেন।

गूला.।

র্পাহর	—विधिम	মফংস্বল	—অগ্রিম
বার্ষিক——	a	ডাক্যাণ্ডলসমেত	
ষাথাসিক			>)
		ষাগ্রাসিক———	

এক কাপির মূল্য—১০ তিন আন।।

গ্রেহণেচ্ছু মহাশয়েরা কলিকাতা ১০ নম্বর ক্রাউচ্স্-लেन, न्प्रांशितिका, निष्कूलतूक याख बीयुक वातू শশিভূষণ চট্টোপাধ্যায় মহাশয়ের নিকট পতাদি ও मृला (প্ররণ করিবেন।

# नश्रां क्रिश्यां

नाउक।

অমৃত বাজার পত্রিকা আফিনো ও गकात को जनातीत (इएक्रार्क वातू श्रांश हजा नतकात महाभारयत निक छ थाथवा। वक्टोका। एक माञ्चल ८० जाना।

किलकां जा व्यक्त धरक भी वाकिम।

चागतः। विमानलायतं निकक्त, ছाত্র, কর্ত্রকীয় ও । धात्रन वाक्किव्यांत छेशकात्रार्थ छेशतिष्ठक कार्यान नश मर्श्विक क्रियाि । किल्काकां श्रेष्ठकां ि य निश्रम विक्य इत, विप्निंगञ्ड विकिश्र मित्रारम बा (म ग ला) शुंखकां मि शान ना विलिशा आगता धरे क्रश (ठिखोश क्रजम॰कण्श इरेशा ছि।

य । इंगिर्शत शुंखका पित थाराभाष्य इचेटन । अस्मित्याम गेटक परे रेजन विस्ताय छेनेकाती। डैं। इन्तर्भ निम्नयाक्षतकतीत निक हे श्व लिथियन। व्याधिय मूला वाजीज कमिनान (मज्या अ विपादन भुखकामि (श्रित्र वत्र वत्र वार ना।

किनिकार्छ।

জীকালীপ্রসন্ন সেন গুপ্ত। कलिकां जा वूक धरक भी আাফিদের ম্যানেজার।

्रान्यक्र

वाम किकिएमा।

३ग थए- गला जाक गांखन मह ७॥० छोका विक वावया व्यर्ग थिम किन मन महिन अक्षेत्र व्यक्ति मतल जायाय, त्निने जाङ्गात গৃহস্থ দিগের ব্যবহারার্থে কান্দি দাত্ব্য চিকিৎ-नात भव धिमिक्षा भे भार्कन बियुक दातु इतिनातासन यरमगानाभास कर्ज्य थानी । पूरे ्याना जाक याजन गाठाईटल महीशब (मउरा

কলিকাতা, ञीछकनाम हरिकाशाया नानवाजात, श्निष्ट्रस्थेन।

কলিকাতা

वद्याजात कि है नश्र ३२। শ্রীযুক্ত হরিশ্চন্দ শর্মার थाज (मोर्कालात मार्शिय।

অনেক পুৰুষ ও জী ধাতৃ দেকি লা ও ইন্দ্রি শিখি-लाज। जाना मक्त मा भनः (कुर्ण कालयाशन करत्न। (कान প্রকার চিকিৎসায় ফল প্রাপ্ত না হইয়া হতাশাস

शंत्रभीत शीषा, खक्र एक, जिल्हा खक् वाय अ जनाना প্রকার আহিতাচরণে শরীর শীর্ণতা ও জীর্ণতা প্রযুক্ত ধাতু অভিশয় দুকাল হয়, শুক্র পাতলা হয়, ধারণাশক্তি इइंग्ना थादक।

इंशांत छे९क्के खेयथ এখানে প্রস্তুত আছে इंशा সেবন করিলে বিশেষ উপকার হইবার সম্ভাবনা। ফ্র র্ভি विश्वीन मन ও শরীর म्या र्डि युक्त श्रेर्त, धांत्रण-শক्তि इक्ति इहेरव, खक शांज अशित्रभारणं इक्ति इहेरव।

याश्रा विशेष विश्व विष्ट्र क्षित्र विश्व विष्ट्र क्ष এখানে উপস্থিত হইয়া চিকিৎসার ব্যবস্থা লইবেন কিয়া शीषात जावशा विखातिक क्रांश लिथिएवन धवर खेवरधत मूला ইত্যাদির জন্য প্রথমতঃ ৫ পাচ টাকা পাচাইবেন। (तांशीत नाम, धाम आमानित्शत द्वाता श्रकात्नत जानहा नाई।

যাহারা নাম অপ্রকাশ রাখিতে চাহেন, ভাহারা কেবল রোগের বিস্তারিত তাবস্থা ও ঔষধ পাঠাইবার ठिकाना निशित्न जागरा अवध পाठाहेट भारति।

मृल (वमना, मহावार्षि, क्याकान, शलशेख जर्भ, वर् गूज अ मकल श्रकांत्र डेशमः विराशित ঔষধ এখানে প্রস্তুত আছে।

> बीयू क इति म्हन्स भाषात (इयात প্রিজারভার।

यिया अभा वस्य वािकि मिर्शन खकुवर्ग किना यम । ११ वर्ष । इक्ष्य वर्ग इक्ष्य वर्ग इन उ श्रुष्ठ इस् । इश्त मृला थिं जिमि ,, ,, ,, ) ो लेका ডাক মাসুল ইত্যাদি ,, ,, ,, ॥।। তামা

> শ্রীযুক্ত হরিশ্চন্দ্র শর্মার ् शिय मार्गत टेख्न । ·

যাহারা অতিশয় পীড়ার ও মানসিক চিন্তার জন্য মাথার বেদনা ও অবসন্নতায় কাত্র থাকেন

इश्रेश প্रতिमिमित मूला ,, ,, , ) छोका ডাকমাসুল ইত্যাদি ,, ,, ॥।।। আনা

> बीयुक इतिकाल भागात কলেরা ক্যাম্ফার।

व्यर्था उना छेठा द्वारश्व कर्श दब्द वादक । माजा একবিন্দু হইতে বিশ বিন্দু পর্যান্ত, মূল্য আদ ঔন্স সিসি वात जाना, धक छन्म मिमि धकछोका छ मुद्दे छेन সিসি ১॥০ টাকা। ডাক মাস্থল প্রত্যেকের চারি আনা। छिशातां ज ममख छेयथ वह वां जांत मि हे न १ ३२ अति-এ एक ल जर्शिका तिम इत्ल शांख्या यात्र।

# विधिक (विष्नांत भट्शेश्रथ।

इय अ मखार ना ९ शिख इं द्राधा ७ मृत करत। किनका जा চোরবাগান বি, এম সরকার কোম্পানির ভাজার ত্রী হরিশ্চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত, ২২৪০ থানায় প্রাপান মূল্য ও টাকা, ভাকমাশুল। তুলা ১ টাকা ডাক মাস্থল থ আনা জীজাতির वाना।

छि । ११ न । इरान छोङ्गांत छूवन योङ्न मत्रकारत्त्व । नार्त्र, ध्वर द्याप्ताराणांन, १४ न् एक्न, नाम निक्छे ज्लू क्तिल भाउरा या हर्य।

বিজ্ঞানসার। छेशक्रगिका।

इंशांड शमार्थ विख्वान, खांक्रांडिक खु-भान, ऐस्मि, विमा।, नारीय शक्रिक्ड জ্যোতিষ, রসায়ণ প্রভৃতি ৬৩ খানি চিত্রসহ लिখिত जार्छ। ১৮৭৩ मालের ছাত্রতির शतीकां विकिष्ठ मयुपास विकान इकाट जारका २२२शका। शुखरकत ब्ला ५ होका फांक मालान । जाना।

कलिकां जा मः क, ज यदन्त ইতকালয়, कार्गिनः लाइरव् बि अ नर्गान कुरलब लिक्क बीयु ज वांतू का नी श्रमत एथ गराभाषात्रत निक विक्शार्थ शिष्ठा जार्छ।

बीवीदत्रश्त शांद्ध।

বিজ্ঞাপন

गः का यक जुदतत यद्शेषधा

मङ्ख्य मङ्ख्य शरीका द्वांता (बई अयरधत भाग शही कि इहेश एए। इशली ७ वर्षमान প্রভিতি मংকোষক জুর প্রাণীড়িত জেলায় ইহা वाङ्ला तथ वावङ्ग इहेट एए। जुब, शीइ। यक्र , भाश छा ज्ि य ममस भी जा (मतन तिया, वो ञाजिति के कूरेगारेग वावरात षाता जाता তাহার বিশেষ প্রতীকারক। মূল্য ২ টাকা भाश एकिमा छल।

जार्नाद्वाद ग्राहो वधा

বিশেষ প্রীকা দারা প্রতিপন্ন হইয়াছে (य इंश वाता अर्वश्रकांत जर्भ (धककारन जा-द्वां शा इया। यला अं। छोका यां युपक माखन े जित्राद्राद्र यहिष्य

ञादनदक्त विश्वाम (य, होक कथन जा-द्रांशा इश ना किन्छ (ध । छेषध वावङ्गंत क्तित्ल (म ग्ड ज्याशे मृत इहेर्य। गृना आ दोका गांश एकिंगा एन।

উক্ত <u>ख</u>ेषध क र शक्ति बाता । वादि वत छि हे २७ वट जरन शाख्या याइरव। (८८)

" ভিক্রিসায়ত সিন্ধ" জীব গোস্থামীর णिका ७ वाञ्चला जञ्चाम महिं मश्या किया युफ्जि इहेर्ज्छ। हेश्त ५ ग ७ २ स मर्था गुणिक इहेशाएक, व्यक्ति मण्याग्र गुला कारित वाना एक माल्ल এक वाना । शक्रिक म-হোদয় গণ নিম লিখিত স্থানে প্রাদি পাঠা हेल शुखक लाश इहरवन।

छोकालिनाम नाथ। কলিকাতা বড়বাজার कामातिशि

न डेर्नान्मनी

मजीज तज रा जारमा बमानीस हैरा जामाति धामी खेरथ मियदमत निश्च किलाकोण। मुकाताम रायुत्र छिलाम ख्तल, किलाकाण। सर्क्ष छ स्टूल छ छ छ मश्य, ज रखाना साध्या

वागरा निद्यत शब थानि जरतामश्र इहेट था व इहेशाहि :--

णार्थनात वहे शिविकां म नोनक दत्त वा वा गित्र व ত্বার্থপরতার বিষয়ে অনেকবার অনেক কথা প্রকাশিত इडेशाएड थवर जामा अक कक क कि शिका भिंग इडेए उ इ निमा विदेश वर्षा दलाहिन। महकादत प्रियल नोलकदत्रत অত্যাচারের ক্রমান্বরে রিদ্ধি ভিন্ন কোনক্রমেই হুশ্স विश्व इत्र न।। अविशां ज नीलविद्यां दश्त शत्र किছू मिन छेश प्रतित छेश गम इरेशा हिल, जात्मक स्थादन क्षी छेषिशा शिया ছिल, छां जारावात पुः स्था छे शत शवर्ष मार्थे त पृष्ठि পড়িয়াছিল এবং সর্বাত্তই একরপ শান্তি বিরাজমান হইয়া-किल। किन्छ जाना काटल समाइ श्वर्गर श्वर्षा आकार था विष्युद श्राम इहेब्रा आमिल, क्यार देश्री लिख कुरी তুলির পুনতাপন হইয়া উঠিল, কয়েক বৎসর নীলের মূল্য গত কল্য এই প্রা<u>ম নিবাদা বদন দেখ নামক এক ব্যক্তি</u> याद्य मोलकदत्रत वक्षण्य थाग्य इहेद्रा छित्न, जावात्र প্রজার প্রতি পীতৃন আব্রত্ত হইল। কার্যাবশে অনেক। श्राद्यत अमीमात्रश्रम निध्न इरेश्र मृर्डिमान डेश-धार्याशांत नीलकत्रशाद्यात इत्छ निष्ठ्य विषय वर्षण किति-लिन। তोश्टि जाणां जाता शक्ति श्रेन। पटक नील बर्शाल जाजाजादाई जान्दित, जाशाद् जावात जमी-मात इरेग्नो कत्रहा । अञ्जि विशाप निरक्षिण कित्रिया निहम-হার নিরবলম্ব প্রজাগণের অভি জর জর করিয়া তুলি-शाट्या ध्यम जाजाकादत्र हत्रम जावन्था। य तथ जाजा।-ठात (मथा या रेट उट्ह, रेश जार शका (य जिथक जाद कि हू इहेट भारत, जाहा जारूगान भार्य जानमन कित्र भारा। याश्रम्। প্रकाता माधात्रगंकः वटल (य, यथम नील-विद्याशे इয়, তখন প্রজার প্রতি কুঠিয়ালয়ণ এত

অত্যাচার করিত নাগ্য দৃষ্টি করিলে হৃদয় বিদীর্ণ হয়। প্রজাগণের ধান্য বপর। লইয়া গিয়াছে। গরিব ব্যাচারি গরুটী পাইয়াছে, কিন্তু अनोलकदत्रत नोल बण्ण धारा धक अभदर्श भारत स्था थारक। क्रियालगण वह ममस्य जात्मक ठिका लाछियाल नियुक कदत्रम। छेश्राता छेश्रामभातूमाद्र जनवत्रकः ध्रान्। मिटशंत लाजल धवर शक वल श्रांक लहेशा यात्र। यमि কোন প্রজা নিজ কার্য্যের ক্ষতি হইবে বলিয়া ঐ স্মুদায় निटंड जाशीकात कदत, जाश शहरल जफ़रण्ये माकार यममृट ज न ना श ना छिया न ग कर्ज् क जारात्र की वन जश्म-शिङ इहेशा छेटि । विद्यास अवाधाङ। धामर्यान करित्न गगरगर जाना श्रादत अन्य भृतिया तार्थ व्यव यदश्यता-मांखि थाङ्गित करता इंड्राएड यमि निष्मित यथामसंख गोलित गिरिज मिर्ज मा छाट्य, जोशे श्रेरण देश रहल তাহাদের গত বাছুর প্রভৃতি অনুদেশ হয় এবং শিক্তে প্রজাগণের প্রতি একেবারেই বিমুখ হহয়াছেন। তৎ-। সুনিয়ম ও স্বিচার কেছ কি কখন শ্রবণ করিয়াছেন? गकल প্রজারই (लाकन शक न। शक्क) 810 विघा कतिश्व नीत्नत मानन उत्हा थ्यम मानन शहरनत जीवन नील वशद्वत वासामि निर्माश कितिए इस धवर जाबद्धाद्य वाजिल वाधिया इपिट्म (भी श्रेश्या प्राप्त र्य। योश्य अन्य जान्य जान (म जानना नाद्य व श्रृज्ति नाजात (मानगामि वाटम छे भारू छ गुटलात कित्रम्थ था था श्रा व्याना भावरं नां इरेश शादक। (म यादा इंटेक निएल मामन लहेश निएल अभिएल भीन वंशन করিয়া দিবে এই বন্দোবন্ত—তাহাতেও ক্তত্ত ক্মদক্ষ कार्याचार्याचा व्यक्तिका । दिश्वता जान जिल्ल भागा বুনিতে পারিবেনা তাহাতে নাল বুনিতে হইবেক, যদি অবণ করিয়া ত্রদ্ধী কৃষক নিকদাম হইল প্রতিহিংসা ষেরপে নিজ্ঞীতন হৃইয়াছে, তাহারও কর্জ ক্রম বি-द्राम अपन्त अस्ता मुस्ति अपनित्र र इंडानि मानत मर्-

भाषा वर्षण करव, जोशा श्रेल आ आण जालियो जिला श्रमद्रीय धे छ गिएड मील वंशन कहिएड वापर इस । खीस-জिमिटङ नील, आशिन लाकमात्नत मात्री, उथानि उ देमवार তাহার ছই একটা গাৰু नीলের মধ্যে গোলে তাহার আর बका পाएशा जात इहेशा छेटि। महाभग्न प्रश्यंत कथा কি লিখিব, লোকপরস্পরায় এরপ শ্রুত হওয়া যায় যে,যে সকল লাঠিয়াল রক্ষিত হইয়াছে তাহাদিগের মধ্যে অনে-क व्यदिविनिक। नीत्नित किमिटिक शक या छ शा मृद्रित थ! क्क তাহার পাশ্ব বর্ত্তী কিয়া অন্য কোন স্থানে গ্রাফ দেখিলেই তাহারা পাউতে লইয়। যাইবার নাম করিয়া যাহার গ্রু তাহারই বাতীর সন্নিকট দিয়া যাইতে থাকে; দে পাউত্তে शिटल अधिक জितियाना लाशिदिक यदन कित्रा जिल्ला বিস্তর কিঞ্চিং দণ্ড দিয়া, তাহাদিগোর নিকট হইতে গাক कि गाँचे गाँ । वह श्रकाद दिनिक अर्थित लांड হয়, তাহাতেই তাহারা চিরজীবিকা নির্মাহ করে। নিম্নে क दशक जी जा जा जा जा दिव से जिल्ला जिला जिल्ला जिला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला जिल्ला थाश्च नेश्रान्त निमिछ निष्क्रित क्रिम हाम क्रिडिक्न। महम। कूठी त जब क , शक जाशामिशिति उ आधिन आमिश्रा বলপ্রাক তাহার সম্পূর্ণ অনভিমতে, নিয়োজিত লাজল ववर शक अर्ग कित्रिश हिल्या (शल। मि अर्रित्र जाम क्षांत्र वाश् विख्छ। ना कित्र । विषय मत्न शृह् छ्छा। श्राभन कात्रल, खिनलाम (य, ममख िनन क्षेलाक्षल क्षेत्र वादा नोल्नित्र জिमित्र ठाम इहेमाएछ। (कहर विलए लाशि-लেन (य, कार्या ममाथा इहेल माय़श्काल शक इहेछे। পाউতে প্রেরিত হইয়াছে। ভাবিলাম যে যেরূপ ক্ষতি रहेशांट्य जारा ज जनाशांटमहे अक्रथ ना छि रहेट भारत। (२) ভोमश्रुषा नामक এक वाङ्कित्र এकिही शक आहि। नोलकदत्रत उद्य (म मसमात्र शक ने वाशित्र। त्रांच्य। वक मियम मि शक्रिक वाश्रं मिया कान कान्। भाष श्वानाखद्व शमन कद्व। वार्गेट्ड क्ट्र ছिन्नग। शाश्व वर्डी ल्लांक् शा विनन (व, व्यवम् व भारेश इरेजन जागानिशांत নীল বপণের সমরে যেরপ উপদ্রব হয়, তাহা আাসয়। ঐ বাঁধা গ্রু বন্ধনোমূক্ত করিয়া পাততে वल य अक भाश छोल मड़। शकत भलि छिल, তাহা वाभश् उ इहेशाएए। कि को जूका वह बावाब !!!! (৩) য়াধার্চর বাক্ত নামক একগাক্তর ক্রয়ক একদিবস চাস क्रिट छिल, इंडिम्(४, এक्জन जामिन ও इंड्जन जामान-शिक्षि आभित्र। जाश्व नामन अ शक नहेट उ जाहिन अवर विनन তো गारक अया स्या जा मानिरश त जिम का का त्रान निया व्यामित्व इक्ट्रा (म छेकाट्व व्यक्षोकात कताय এরপ করিয়া প্রহার করিল বে তাহার সমাজকত বিক্ষত इड्या (भन। इउछाशा यथन जामामिश्य निक्रे जामिन ज्थन जामना जोशांक निन्नोक्षण कर्निमा निजास खाननाम तम চ्याषाङ्गाम भियाष्ट्रिन, मार्जिद्धे मार्ट्य विलिन य जाना मगर नाई कना जानिया नत्थां छ कति छ, वािष विठात कतिव। इडागा कृषक म किवन वाही প্রত্যাগ্যমন করিল এবং গ্রমনাগ্রমনের কফটই তাহার চুড়ান্ত विष्ठात इहेल। (म वाषीटि जामिका यावहे, कृष्ठिशाल কর্মচারিগাণ উপস্থিত ইইয়া তাহাকে নানাবিধ ভয় প্রদ-र्भन क्रिंडि लागि लम, बिल्टिल यिन जामानिशांत वि-পক্ষে অভিযোগ কর তাহা হইলে তোমার সার্যান্ত क्रित्र, श्रामि ङम्बोङ्ठ क्रित्र व्या व्या निर्वास भावावदर्ग रहेद्व। धरे मगूनां च किश्च जर्बनवांका

ভৌগের গিছিত্ত প্রসাতে অব্যাদ্ধ সাল কার্যা नित्र छ इहेन।

व्यामना यदमानन, माखना इहें हो हो । वान धक थानि शब निदम श्रकान कित्रनाम :

व्यागता याहे (काथा, व्याभानित्यत तन्ता किका कात्र, नीलित पित्रा भिना क्रांडिया शिलाइ उ इकेन, शिला रेगारे वा याब (काथाय श) शिव अका निर्श्व कि उका-वर्जा (कश्हे नाहे ? श जेश्रत ! हिन मिन कि हिल्ल जला योगिनिद्यां वक्ष ज्यामित्व ? जामानिद्यां बक्षा कर्छ। अक शवर्षियं, किन्छ जाज काल य शिक्क, जाशाद्य (य श्वर्णयणे षात्रा क्लांन छेशकांत इहेट्य, म क्लांन ह्रथ। पांगांगांज। कांत्रन यिन किছ् इडेज, जोडा इडेटल जांत कारिश्वल वाश्वाञ्च था कित कित कित के बहुरा थाकिए के ना णवनाई अमिटक अक वात ना अकतात मुक्ति चित्रिजन। যেরপ! অত্যাচার তাহাতে এক দিন তিষ্ঠান ভার।

भश्रभग्न, ध्रमन मिन नाई (या ध्रक्रवात क्रिया क्री रहेट जन ना जाहरम। जन जा जिल्ला है जो लिया है। যায়, ভাবি কপালে নাজানি আ চলে ना। किन्छ कि क्रि, शा ठाला । वार्या प्तिथ मार्वि ठक्क तक वर्ग कितिया विषया जाटक्य। উপস্থিত इहेवा माज এই বোল বাহিত इहेल " लाला जाय नील (नई कदत्रशा (जाशाता वाश (या शात जे कद्रशा वादकार " "कई शांश हिशा (ल यां जां ना वा यां बर्फ नील (मगा के कत '' वार्था ९ श्रहादतत पात्रा नील कता इटिं श्रीकात्र कताछ। ज्याजा कि कति ध्रहादत्र यञ्जभाग नील করিতে স্বাকার করিলাম। স্বাকার করিয়া প্রাণ শুখা-इंशा शान, जाविशा इत्व । कि? जागता हाल्यावा मात्र्य, কোখায় থাত্র বিঘা জমি চাস করি, তাহাত ও যদি আবার नोलवुनि जारा रहेल भात ह। श्रीवर कि मित्रा। पहे रहेल এक প্রকার, আবার यদি একট মন্দ হ্য, তাহা श्रहेल आत जातन थाका जाता जलन शब्दिन थान ख्यादेश यात्र, जादात शत जावात अवादात अवादात थनक्ष " भश्रभात्र प्रः दश्र कथ। जात्र काद्र कि इव। ভाত क्रिया थाइवात जात छेशात्र नाइ, তবে यनि महागत्र जानू ग्रह श्वक द्शां मश्राग्यक अक्षाय जाया क्रिया दिन्न, তাহা হহলে আর কিনা করেন, চিরকালের নিমিত্ত णां मानिशदक किनिया त्रारथन।

किय्रताम द्रत्त शवद्यत्रकत मद् भीलकृष्ठियाल गटनत ञाजात शावात भूटक्त नाम कि जमटशका व्यक्षिक श्रांत्रगाद्य वृक्ति इइयाद्य। विनि धवर माख-तात शज्दशतक देख्या जिन्न। जन जान इहेट जिल-তেছেन ए, नीलकूठीयालगन প্রজাকে বল ছারা नील कित्रिट वाथा कर्तन। छाउँक्याक बाउगाचारतन निकल असमाय रूपस गढ्न शक्षिन इहेस रहन वागता इ.जश्टार्ष जा सता मश्रत अजा माधातन मजा क्यार क्राजाका मन्। जिन्न माजिए दे हेर थाथ ज्या क्या नी नकू है या जिल्ला क्या है वित সাহেনের নিকট তিবোগ করিতে উপদেশ দিলাম। বিষয় প্রকাশ করি। এ সমুদায় অত্যাটারের কাহিনী ञ्जन नदर। शृदर्स जागता जर्नि का देश का निजाय उ व्यद्नक मगर हत्क (मिथिजाम। नोल नहस्क (य किंगिमन वरम जांदा पाता महत्य महत्य जांद्य जा विषय প্रकाश्चि इय अवश ध अजा जा जा । उत्रिया गाय। जागादमत विद्याम ছिल (य, ऐश् जात इत्व ना। धथन उ व्यापादमत मदन्म इ इ । (य, शक् व व्यापात) वाजाजा वाज इरेशा हा का, कि व यथन धरे क्रिश जिन्न इस्ट व मन्द्र शब थाथ इइंटर्डिइ वरः शबद्धातकगन (य ध्य व्यक्तात थाडि श्राव जिन्न विमर्कन मिल ध्राव व्यव व्यव व्यव के एका जिन्न विष्ट हिन, उथन व्यामना कि विलय है वा देश जिन्या म লাপ করিয়া শাকেন। যদি কেই কখন ভাল জমিতে। প্রদান করতঃ অপরাধ হইতে মুক্তিলাভ করিয়া ক্ষ্ঠ করি (বে সমুদায় নীলকু ঠিয়ালগণ প্রে জ্ঞানগার

हिएलन, जथन डाँशादित अपनिक जिमिनात इहेगादिन, এবং জমিদারি ক্রেয় করিয়া ভাঁহাদের অত্যাচার क्तात आंत्र अविधा इहेग्राष्ट्र। नील क्रिमनात्रित्रात िक छे थ क जन कुर्वियाल वर्लन एव, जाना ना कतिरल नीटल लांड इय्रना। धकथां मिन्ना ने ना इडेक, क जक है। मजा वर्ष। स्वज्ञां श्वामिन प्राम नीन খাকিবে, ততদিন যে অত্যাচার থাকিবে, তাহার কোন गटन र नारे। केटव क्रियानगन প্रজात्रेशत नानाज्ञन वाज, कि कि कि वाश वाश कि वाश कि वाश कि वाश कि विश्व वि छै। शामित्र नार्षितान वाशिएं, यकर्मिया क्रिएं, आयना भाजियात ताथिए य वास भए, जारा जारात यि थाजारक नौल शाखित गृलात निभिन्न जर्व क्न य अजाठात इहेर्व, जाहा आगता जानि ना। श्रिकाता व्यना शांठ कमलात न,य नील कतिया यपि मन्ग छोका भाग्न, ভবে ইচ্ছ। পূर्वक यञ्च कित्रग आभ-नारमत जान जान जागरज नीन প্রস্তুত করিতে কেন वाशिष्ठि क्रिद्रित, তাহাও व्याग्रता क्रानिना। नील क्रियांन गरगता आत अकि। पाष करतन। छांशापत कृतित निमिछ य क्रिश वास क्रास्त्र, जाशनाता य क्रश नवावी চালিতে অविञ्जि करतन এवर य পরিমাণে অন্যান্য অপব্যয় করেন, ভাহাতে বিস্তর টাকার আব-नाक। এই निशिन जनाका कतिया जर्शिका जिल्ली कतिएक इय़। छाङ्गारमत वाय कि विल्ल जाला जार्थत আবশাক হইবে এবং প্রজার উপর অত্যাচার কমিয়া साईरव। এতদ ভিন্ন আর একটি দোষ এই—এটি देश्ताक काञ्जित माय। देशाता काति कारकाती এवः ভদ্রলোকের প্রতি যথোচিত সমাদর ও সমান पिथान ना। ध कर्यक्रि कार्यन्थ नीलकृति। नान ष नाग्रादम् निताकत्व किति ज्ञाद्य वाद्य व्यव् जारा इहेल रश्ज नीत्मत ज्ञानात दि हिता या । ज्यताम পুবের গাত্রপে য়ক যাহা ৰলেন আমাদের বিবেচনায় नील অত্যাচারের মূল কারণ তাহা নহে। नील অত্যাচার নিবারণ নিবারণ নিমিত্ত স্থানে স্থানে यहकूम। इस । यथाता शृदर्भ माजिएक हेनात्वत भागन ছिल এখন मেখানে मि भागन नाई, প্রভাত বিপরীত ফল ফলিতেছে। এখন যে মহকুমায় इंश्ताष्ठ कृष्णियां व्याष्ट्रिन स्थार्न हे नवागं अमिरहेले প্রেরিত হন। ইহারা প্রথমতঃ দেশের আচার ব্যবহার প্রভৃতি আভান্তরিক অবস্থা জানেন না, দ্বিতীয়তঃ यङ्कूमाয় প্রেরিভ হইয়া একরপে বিজন বনে প্রেরিভ इन, এদেশী য়িনিগের সহিত তাঁহারা আলাপ পরিচয় कतिए घ्रा करतन। তাঁহাদের আত্মীয় স্বজন সঙ্গে थारक ना। यञ्चा यारज्हे अकला अक ऋल्ल वाम क्रित्र भारत ना। ञ्चार हेराता नीलकृतिशाल मार्श्विमरगंत्र मर्फ व्याचीयं करत्व। कृषियानगं অনেক মোহিনী মন্ত্ৰ জানে। যুবা সাহেবকে অভি ञाल् श दिरान यद्या अञ्ग क करता इशा कृष्याल গণের প্রতি পক্ষণাতী হন এবং কুটিয়ালগণ হাকিমকে . शंज कतिया व्यजातात वात्ष करतम: व्यज्तार नील অত্যাচারের প্রধান কারণ আমাদের গ্রণ- গত শনিবার বন্ধ সন্ধীত বিদ্যালয়ের ছাত্রগণের (मण्डे। भवर्गामण्डे यउ निम এই तथ नवा, व्यमिन विज्ञा विष्ठा विज्ञा विज्ञा विक्र ও অবিবাহিত এদিষ টেণ্ট গুগণকে মহকুমার ভার কালীক্ষ্ণ দেব বাহাত্র সভাপতির আসন গ্রহণ जित्वन, उठ मिन मिन इटेट नीत्नत अठारात्र करतन। मजाट क्यूमित देन ए अक्रेत छेए। मार्ट्य নিবারণ হওয়া কঠিন। খদি গবর্ণমেণ্ট এসি- উপস্থিত ছিলেন। এক বৎসরের অধিক হইল य हिन्छे। गर्नत आडि धार्क कामन कतिराजन, जादा ऋर् तत ए देन रम्भक्ति वातू इत्याहन जिले वात्र

विषर्यं गवर्रमणे निजास शक्षां । करेन मार्चिय यक्तश व्यश्राशी, वाँचारक वादात छेश्युक कि भाष्डि (मउग्ना इरेन? विस्थियः आशार्वा कारिम्न मार्ट्य गांज्य छे हे मिर्गिक जमीय क्रमञा দিতেছেন, मञ्श्रं उ रिकाश ভয়ানক আইন কানন इइशार्ष, आवात नील क्रिशाल मार्ट्यता यनि व्यनाताति याजिएके इन, जाश इरेल नीत्नत व्यक्ता-চার यে সহজে নিবারণ হইবে তাহা আমরা বিশাস कतिन।। किन्नु जगमीश्वत विष अ विषश्ति এक श्रुल রাখিয়াছেন। যেখানে অভ্যাচার হয়, ভাহার প্রতি-विटिषां इहेश कू किशाल कूल এ किवादत ऐकिइन गाय । অত্যাচার হইলে আবার যে বিদ্রোহ হইবে ना, तम (क विलिट भारत? विस्थ्य व । প্রজারা श्रकादशका अकरन जातक छात्न वलवान इइशार्छ। नील क्रियालाया या वाजा हाती इनेन, जाशापत वावमाय चात य पिट्ना धन वृद्धि इय जाइ। त कान मद्गि नाइ। व्यत्नक क्रियांन (य एएटन क्रून मश्याभाग करतम, विमा मृत्ना अवश विजतन करतम, রাস্থা ঘাট প্রস্তুত করান তাহার কোন সন্দেহ नाई। विल्यबङ नील क्रियांन ग्रन (पदल थाकार्ड यशावडी (लादकत (य व्यदनक डेशकांत व्याह्य (म বিষয়ে ও কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। স্ত্রাং ইহারা विना व्यवगां हादत नील क्ठि हालान এটি निवास প্রার্থনীয়। কিন্তু তাহারা যদি আবার অত্যাচার করিতে আরম্ভ করে না, প্রজারা যদি অত্যাচার সহ্য করিতে না পারিয়া আবার বিদ্যোহী হয়. ভবে नील क्रियालवा निन्ध्य डिक्ट्न याहरवन।

व्यामि खाक्रमगोद्या वावू बाज नावायन वस् अ शंखिङ व्यानन्त हत्त्व (विषाख्याभीना '' রাজ। রাম भाइन तारा প্रानी ज शास्त्र वली " मर्श्य कतिरा थए अ थए প্রকাশ করিতে সংকল্প করিয়াছেন। আমরা छेशां श्रां श्रां श्रां हरेग़ाहि। ताजा तागरगाइन तारमं क् जिनम् इ उँ। श्रां माज्ज्यि ७ ७ जिन ज-প্রকাশ থাকা বঙ্গীয় সাহিত্য সমাজের পক্ষে একটা कलकु अक्षर। অতি উপযুক্ত व्याक्तिका (महे कलकु विया हत्न श्रव इरेशा हिन। अरे मर् कार्यात जना वाक नावायन वायू उ (वनाखवानीन महानय ममख হिन्दु मगोद জ त धना वादित शाख। আমরা ভরদা করি পাঠक माधातन আগ্ৰহ महकारत छ। হাদিগকে माহায্য क्तिर्वा वाग्रता खिन्सा वानिम् इहेलाम (य त्राज्या त्रायरमाइन त्रादयत त्योज इतिरमाइन वातू अ शाहित्याइन वावू প্রকাশকগণের সাহাযাতের এক শত টাকা দান করিয়াছেন।

श्वानाखदत 'महहत नामक धक थानि वाञ्चला माञ्चाहिक शांजिकांत विज्ञाशन एसे इहरव। এখानि बाबू विश्रमाम वल्माग्राशाश कर्ज्क मन्नामि इहरवा विधा माम वायू जात्नक काल इहेट मश्वाम शास्त्र महिन्। मः स्थे जाट्य, युन्ताः जामता जामा कति य 'मइठत ' धक थानि गननीय शक्तिका इहेया र्डि रेट्र ।

হইলেও কতকটা মঙ্গলের সম্ভাবনা ছিল। কিন্তু সে। যতে ও বাবু শোরীন্দ্র মোহন ঠাকুরের সাহাযোগ এই

विमानाशी मध्याणिक इय। अथारन जिन्छी त्यांनी व्याद्य। धक्रीदि आज्ञात, धक्रीदि क्रि मश्मी उ धवर ज्ञीयणीए मृतम वामन निका (मञ्जा इहेया थारक। ছাত্র সংখ্যা ৪৭। সাত জন ছাত্র পারি তোষিক প্রাপ্ত হন। ছুই জনকে ২ খানি রূপার পদক उ जाना उ जादनत काश्रांक मिलांत उ काश्रांक जम्ता দে उरा इरा প্রকাশা বিদ্যালয়ের ছাত্র গণকে গীতি यस शांति जो यिक (म उरा ( ) वे वागता न् जन ( मिथना ग এবং দেখিয়া অভান্ত আননিদত इইলাম। ইউরোপে मश्गी जिका ना इहेल विनाधाइन मण्ये, व इय ना। किञ्च व्याभाष्मित क्र विमाष्मित मरशा छेश्त वछ व्यामत (मथा याय्रना। इंशांत कातनं এইयে जिएएण मश्गी जिना! विख्छानाकारत अशीज इहेवात छेलाश ছिल ना। जर-गी जाशांशिक क्षित यांश्व शांश्वी वार् जातिल्ल भाइन ठोकूरतत माद्या हिन्दु मश्मी ज विख्वान श्न-ब्बोबिङ क्रियाद्य, जवर जरे विनामायि भार्या-कारत मश्गी ज जाजारमत जक्षी छे इस स्वान इरेशार्छ।

গ্ৰণ্ডের পক इইতে ফোজদারি যোক-प्यांत कतियापि उ माकी गावत थत्र (प उयात शक्ति (लः गवर्गतंत्र जारम्भ প্রচারিত इইয়াছে। क्षिणाति वाणान् (क्वन धरे २ भाकप्राय कतियानि अ माक्नीत थत्र निट्ड भातिद्वन। (5) (य अकल (यांकर्म्या गंवर्वद्यद्धेत व। জ्रुल, यां जि-रमें अकृति त्रांक कथं हातीत अनुगि क्या छेशन्इंड इय़। (२) य मकल यांकक्ष्यांय जा-यौन लहेवात विधान नाहै। (य मकल याकप्रशात विठां इक व्यार्थन हेक्ट्रामं माभी ज्ञान कर्तन तम मकल (गोकर्पगांत (कवल माकी गंदिक थत्र पिट्ड रहेरव। 'अञ्चाञीञ (य मकल भाककमात विषादतत महिङ माधांतरणंत मः उपव जार्ह (म मकल यांक-क्यांत माकीशंगदक थहर (क्उरा याइटक भातित् किञ्च विठातरकता छे ज थत्र वानी गादनत जाता उ (म उरा ३८७ भा ति दबन।

अदम्भं शूलिया य किज्ञ १ ज्यानक जा जा वा कतियां थाएक, जार्। तम निवम जेन्यत बालिएजत यकर्षगांत्र विलक्षन श्रंकांका भारताट्य। वर बाजा-চারের কথা যিনি শুনিয়াছেন, ভাঁহারই শারীর রোমাকিত इইয়াছে। আশ্চরোর বিষয় ষে যাহা लहेशा এङ दूर्यल इहेश। शिल, जाशादात लिशहे-कतिलाग ग। श्रीलाभा मश्राभाषन कतिए इहरल ভाल २ ডिकि कछ अशाहिए छिए कि नियुक्त करा कर्डवा। किन्नु वाननाश यं छिनि छिन्नि कि शांति दिखे दिखे वार्ष्य जार्थ। क्य ज्य ज्य उ (बाधा लाक। (तनी मारह्य एक ङ्ब श्रधान श्रीलण ज्यभातिर्व्हेटलन्हे नित्र्य श्रीमिक, किन् দে দিবস হাবড়ার মকদামায় তিনি যে সকলা কথা বলিয়াছেন ও তাহার সম্বন্ধে যে সকল কথা বাহির इरेश পড়িয়াছে, ভাহাতে ভাহাকে পুলিলের উচ্চ शमवीरिक बार्था कक मूब नाग्र मश्भक, बला मान ना । कल दिनी मोट्ट्टित विक्टिन, जोशता जादता অনেক বিষয় শুনিয়াছি ! হাবড়া পুলিশ অত্যা ठारतत जिनि मन्भान मात्री ना इन जाशिक रि माशी जागात जूल बाई। क्यादश्ल माद्श्वत राज माबरे थाक्क, जिनि कान काजि व्यक्ति कतिया করিতে পারেন না। আমরা ভরসা করি, পুলিশ मश्रक्त डें। हात गरनारगांश धकवात डेट्डिंडिंड क-तिया निट्ड शहित्न जिनि छेश्व जन्म ने छेन्डि नां कतियां । ज्ञां जिस्यन ना ।

# THE AMRITA BAZAR PATRIKA.

CALCUTTA: -THURSDAY, JUNE 5, 1873.

WE congratulate Babu Anando Gopal Sen, Postmaster, Krishunggur, on his being promoted to the post of Inspecting postmaster, Jessore Division. Baboo Anando Gopal graduated at the Krishnuggur College and he was led to enter the postal department by the prospects held to our college graduates by Mr. Tweedie. We are glad that his services have been appreciated and he is entrusted with a responsible post. We hope the Babu's appointment will be erelong made a pucka one.

-----

WE beg to acknowledge with thanks the receipt of the following publications. (1) The numbers IV. and V. of Tod's Rajasthan published by Babu Hurry Mohun Mookerjee. (2) Part 1 of a series of Graduated Translation exercises from English to Urdu and from Urdu to English with Rules and Remarks for the guidance and assistance of native teachers and students by L. A. Stapley, Head master, Government High School, Allahabad. The latter publication is very neatly got up and appears to be a useful one. (3) The Spirit of the Anglo-Bengalee Magazines in a series of Reviews by Babu Mohendra Nath Shome. We owe an appology to this writer for our inability to notice his book in an earlier issue. The publication is decidedly a very useful one and as such we hope it will be largely patronized by the public. In the present series, the writer discusses with much fairness and ability the merits and demerits of the first few numbers of the Bengal-Magazine and Mookerjee's Magazine.

----

The Patriot is sorry that we wrote some what strongly against Mr Lobb. Our contemprary, we regret to say, is not aware of the amount of mischief done by him to the Kishnagur College. If he had but taken the trouble of enquiring into the true state of affairs he would have found nothing really objectionable in our remarks. Mr Lobb is very unpopular and we only gave expression to the opinion entertained regarding him by the educated natives of Kisnagur. The brilliant success of the institution, which our contemporary speaks of, is awing more to the labours of the professors and teachers, than the exertions of the Principal. We do not question his scholarship, but has he other qualifications most necessary for a man in his position? Does he take a lively interest in the training of his pupils? Is he at all painstaking? His constitution is consumptive and as a matter of course he can not take as much pains in teaching his pupils as he should. Does our contemporary know that from the reports of Mr Lobb the Lieutenant Governor imbibed the idea of the "uselessness" of the higher classes of the Kisnagur College? How does our contemporary reconcile this with his remark that the results at the university examination are highly brilliant. The higher classes are "useless" and who has the charge of teaching these classes? The higher classes useless because Mr Lobb teaches to at the expense of the poer

them and they have been therefore abolished. We said nothing more or less than this. The government ought to have transferred Mr Lobb from his present situation before abolishing the M. A. and B. A. classes of the Kisnagur College.

The June number of the Bengal Magazine is just to hand. By far the best of the articles it contains is the one headed "Administration of justice in Bengal" by Arcydae. Regarding the administration of justice in Bengal previous to the advent of the English in this country the Writer says:

A portion of the judicial work seems to have been performed by the kazees who were versed in Muhamadan literature and expounded the the Muhammadan law. A large portion of the criminal work however came before the governor or other executive officer of the province, while petty cases among the poor people in the country parts were mostly decided by the zemindars hving on the spot; and this practice still continues all over the country. It cannot be denied that substantial justice was done in most cases by the system of administration, as the parties who satin judgment could hardly fail to ascertain the real facts in any particular case, and were indeed in many cases personally acquainted with the true facts \*\* Nor should we forget to mention the village Panchayets of Bengal, which were among the most beautful and beneficial institutions of the land. The Panchayet consisted of the most respectable men in the village, and as the members were hardly ever ignorant of the real facts of the case, the most arduous duty of a judge was simplified, and there was little temptation for falsehood or coacealment of the truth. The Panchayet sat surrounded by the good and matabbur men of the village, anfl after discussing in a conversational style the facts of the case pronounced their judgment in the presence of all. This way of settling disputes is by no means bad, and it is a pity the practice is fast falling off

The writer's views regarding the jury system are however quite the reverse of that we hold. We shall take occasion to discuss this point in a future issue.

There is certainly nothing extraordinary in the fact that the Hindoos should protest so loudly against the establishment of a Christian State Church in India at their expense, but to see the Christians themselves denouncing the system cannot but call forth our admiration. The following from the Christian Herald will repay perusal:—

We do not contend for a Christian Government, and we never cherished the hope that a Government founded by the victor of Plassey and consolidated by + the plunderer of the Rohillas would ever be a Christian Government. \* \* We will be satisfied with bare consistency and justice on the part of our rulers. We do not approve of the selfish policy of our rulers' and hope that our sentiments on this subject will find a response in the hearts of all our countrymen. If our Government avoid an open encouragement or even a tacit recommendation of Christianity on the score of Neutral Policy, we ask, in the name of justice and consistency, why do they drain the purse of the poor ryot to preach and propagate the truths of Christianity—a purse which is opened many a heart with rending groan. "Why kill the cow to present shoes," " why break the cocoanut on your neighbour's pate" why should our Lord Bishop and the whole host of Chaplains be paid from the Indian Exchequer. We are not aware of any benefit accruing to India, that she may be justly laid under the tribute of supporting these little princes. College must be abolished, the Bengalee must grope in ignorance and superstition, but the Chaplains of St Paul's Cathedral must receive princely salaries, in short, the spiritual wants of rich Europeans must be ministered ryots. It is idle to say that it is incumbent on us to

minister to the spiritual want of those who as placed at the helm of the Indian Government; for granting that such an arrangement is calculated to raise the religious tone and piety of our rulers, and thereby ensure an impartial administration of Justice, we are of opinion, that nothing short of a similar provision. for the Mahomedan and Hindoo gentlemen employed under Government can make the religious attitude of our rulers impervious to objection. Otherwise this neutral policy is a farce, and the support of these ecclesiastical princes,—the success rs of Paul the tent-maker, affords us another instance of European partiality. There ought to be Mollas for the edification of Mahomendan Sudder Ameens and Hindoo priests to inculcate the moral precepts of the Vedas on the Hindoo Moonsiffs. Under the present arrangement there is evidently an undue predilection for Christianity. English trees may grow in Indian orchards, but every line of molicy thriving in England will not strike a root in India.

The following compliment is given to his nation by the Editor of the Darzling News:-

John Bull is certainly in many things a strange animal. He bullies the Sultan of Zanzibar, on the supposition that the slave trade is demoralising; and the same Mr. Bull Supplies the "Heathen Chinee" with an unlimited quantity of opium, the use of which is more demoralising than even traffic in "bleck

The writer might have added. "And the same John Bull has almost enslaved a nation by introducing a Draconian Code and means to take money from though not slaves but certainly not free men for the use of other slaves residing in a different country, belonging altogether to a different race."

LORD NORTHBROOK'S ADMINISTRATION. - The Pall Mall Gazette contains an article on the first year of Lord Northbrook's administration. The writer is evidently no friendly critic but at the same time he appears to possess vast experience of Indian matters and has here and there revealed some instructive facts. He very appropriately illustrates one of the peculiarities of Indian Government which are most characterstic of it and which distinguish it most sharply from the methods of England. In England the uncertainty of a Minister's tenure of office, his subjection to Parliament and the fact that Parliament itself is always composed to a great extent of the same men and always of the same class of men, give the national policy much permanence under great superficial variations. In India everything is in the hands of a small knot of men who hold office for a definite term of years, and are subject practically to but little responsibility during their tenure of office. When a change comes, the scene shifts as at a theatre, and a new staff and a new policy come in together, and have their turn and swing. Speaking of the income tax the writer says:-"The income tax had two great advantages. It made the commercial class contribute something to the public expences, and it enforced economy. Other Indian taxes are much more oppressive and objectionable though they are not exclaimed against, simply because they fall upon a class which never does complain, and never can do so." But besides the above there is nothing in the article which can command our sympathy. The principal object of the writer seems to protest against the so-called inaction policy of Lord Northbrook. His review of our present Viceroy's administration is anything but fair and impartial. He admits that Lord Northbrook has succeeded in earning a good deal of popularity, but this success he says is owing to good fortune; while the mistakes he is said to have committed spring from his own perversnes The writer is evidently an admirer of Loro. Mayo's policy and complains that "in matters of public works, local government and taxation, general legislation, and finance Lord Northbrook would appear to have reversed his predecessor's action" And further on he says " we feel that there is much reason to fear that in many respects he has altered the policy of his predecessor

for the worse, more particularly in regard to

what was its distinguishing characterstic—its general activity wigour." That there is a great difference ween the policy of Lord Northbrand that of his predecessor there is no doubt of. The question is, whether the change brought on by the advent of Lord Northbrook is for the better or the worse. Judging from the state of public feelings it cannot be denied that the policy persued by the present Viceroy is by far preferable to that of his predecessor as is best vindicated by the brilliant success which has attended that policy. Lord Mayo's government was one continued plunder. In whatsoever branch of his administration we turn our eye, we find it replete with folly. The Strachy brothers had undue influence over him and Lord Mayo's administration was in fact principally a reflex of their minds. He fell headlong into the pitfalls of Punjab policy and could never extricate himself from them. The Pall Mall Gazette writer seems to entertain a very flattering opinion of Lord Mayo's policy in matters of public works, local governments, and taxation, general legislation and finance, but never was his government more unfortunate as in all these matters. The financial dilemma dates from his reign. The cry of deficit was then raised and to remove it the existing taxes were doubled and trebled and fresh taxes imposed. The expenses were not curtailed while government went on in its career of extravagance. The decentralization scheme was introauced which meant nothing more nor less than to deprive the local governments of their just dues and empower them if they liked to impose new taxes to meet their demand. The expenses incurred in carrying out the military barracks, irrigationworks and public roads well nigh reduced the government to the brink of bankruptcy. The local self government is no doubt very sweet to hear but every body knows what it practically means. Over legislation was the curse of Lord Mayo's reign. The machine worked and worked and ceased not to work till it deluged the country with laws and codifications. Legislation was in fact carried to such an extent during this reign that the people became alarmed and cried for that rest which our present governor has given to the land and which the Pall Mall Gazette writer denounces as "seductive and plausible." Need we relate the improvements and reformatory measures of the present Governor General? The land required rest and he has granted it-The scandalous way in which public money was spent has been checked and strict economy enforced in all the branches of administration. He has studiously avoided all sorts of et avagant projects which led to such serious consquences. He spoke like a true statesman when he said 'it is more wise to put off some improvements in the administration of the country and to defer the execution of some works which in themselves would undoubtedly be of material benefit to the people rather than to increase the present burden of taxation. By vetoing the Municipal Bill he has not only curbed the spirit of a wayward Lieutenant Governor but saved the country from a very great evil. The passing of the Criminal Procedure Code and the enforcement of the Cess. Act have no doubt east a gloom over his reign but thoroughly conscientious as his Lordship is we have not the remotest doubt that as he will grow in experience and tales of oppression reach his ears he will not hesitate either to get them repealed or shelvet them up as so many dead letter Acts. When Lord Mayo died he left the country almost in a state of disaffection but Lord Northbrook's administration has not only cooled it down but has infused a new life and hope in the minds of the people and the contentment and confidence which they lost have been thoroughly restored. It surprises us that any one could have the hear to reproach a Governor who has achieved such a brilliant success during so short a Preign. The Gazette writer must have been influced by some selfish motives to attempt to damage the character of such a popular Viceroy. The writer's contempt for Indian public opinion and press, his tirades and sneers against the educated Bengallees are only evidences of a mind which must have received serious wounds at the hands of the people of this country. With this clue it is not difficult to identify the writer, who must she either one of the two admirable Strachey brothers or our greatest friend Mr Fitz James

Stephen the framer of the Criminal Procedure Code.

A Hopeful Sign.—An Anglo Indian contemporary not always pronative in its tendency has the following startling para in one of its recent issues:-- "Either India must be governed in India for India, and by administrators responsible to India alone, or India must be governed as an integral portion of the Anglo-British empire in England with the princes of India sitting in the house of Peers and with respresentative Commoners of India returned to the Imperial House of Commons. " This sort of writing has become so scarce now a days that we have felt a peculiar delight in quoting the above. To love is as good a luxury as to be loved. If the selfish instinct of human nature ever prompts us to seek love, no less would a healthy mind feel the craving of loving others. We are often led to express the sourcest feeling of discontent against our Government and its officials. Tender hearted souls shrink from it and are disturbed in their timid sort of goodness. But why is it we censure our Government? Would it not have afforded a better gratification to our Indian mind if it could love rather than loathe? As the true sons of our sweet tempered mother India, we could not cherish naturally any ill feeling to any set of men. It is natural that we would have a little partiality for the Indians. But such partiality does not imply any sort of prejudice against England and its people. No doubt in a very rude state of the human mind, patriotism has often beeu associated with ill feeling towards the contiguous nations or tribes, but such a morbid sentiment could never last if the golden maxim, 'do unto others as you would that they should do unto you' exert any influence in any of the conflicting nations or tribes. It is enough that one party evinces respect for it. The other party must be brought round to show the same heavenly feeling. Then we would have no cause to lament the want of sympathy between the ruled and ruler.

Independence is the primary birth right of nations as of individuals. But it has been at the same time alleged not without truth that no nation has improved without being conquered. How then can these two propositions be made to harmonize, say for instance, in our case? The substance of what we have quoted above would afford a tolerable answer. We are exceedingly glad to find it in the columns of a paper which has hitherto scarcely breathed anything very favorable to us. The end of the relation between England and India is very simple. Duality and unity cannot go together. India and England cannot continue united, if in heart and feelings, they remain separate and distinct. Either India and England must be two integral portions of one and the same empire as England and Scotland - if the intervention of the wide ocean might permit--or India must have its own independent Government with the India Englishmen incorporated into it. But in either case, the Englishmen must relinquish their superiority and authority. If we could reckon our English brethren in India really as so many of us, if they would identify with ourselves not less in sharing the feelings and wants of India than in enjoying its beauties, we would be a free people with all the advantages of English civilization and England would be free from the odium of despotim; at the same time she will have all and more than the advantages of despotism If our Government be substantially our govern ment why should we whimsically make the trifl ing distinctions of colour and appearance.

English Education—The following is from an esteemed friend. We do not however agree with all the sentiments of the writer:—

English Education is the blessing which the English Government has conferred on this country. It was needed to make up the damage which the Mahomedan conquest had caused in the national mind. It was needed to impart life to the withering trunk of the national civilization which had got to the highest pitch of developement and had almost exhausted itself, and was fading. It was needed to console the nation against the misfortune of a foreign conquest. It was needed to satisfy the conscience of a christian race of conquerors. It was needed to secure the convenience of those conquerors. It was needed to supply the dal and rice to many a son of India. So we rightly cry for the pro-

motion of English education in India. Righty we shed tears when the hand of devastation is laid to it.

But we think we often make one serious mistake. We frequently confound the aquisition of the English language with English Education. We often do not notice that to be able to talk in the language of our white conquerors is not exactly to be a clever person; that to know to write English is not exactly to know to think; that filling our heads with quotations from English writers is not exactly enriching the mind with knowledge; that to read Milton or Shakspeare is not always to appreciate poetry; that to pass life in mastering the select idioms from English novels is not exactly the best mode of passing life. Very often our countrymen do not see the above distinctions. We, for one, can scarcely feel any respect for the person whose only pride is to polish. and prune his English with set idioms and select phrases. Be it as it may. What is it we want to say to the public touching this topic?

We want that we should rightly appreciate certain acts of that honest and noble-minded ruler of ours, Lord Northbrook touching the matter of our education. He desired the appointment of committees to examine the text books of our schools with a view to suit them to the wants and associations of the boys of this country. And committees have been accordingly formed. He has also offered to assist and reward those who would translate scientific and historical works from English into the native languages. Fools surely we would be if we fail to appreciate these well-meant measures of his Lord-ship.

Nothing can be more abnormal in a nation than that the simplest item of truth or the commonest article of knowledge is to be purchased at a price so enormously high as that which is necessary for the acquisition of a foreign tongue. How few can afford to do so! And of those who can do not the most require this dear medium of knowledge at the expense of many a most precious thing—health, mental culture and moral improvement? The talk of an oriental University inspired us with alarm. An evil-minded Englishman in authority might avail himself of such a change in the system of our education to really lower its status. And so far as we are influenced by such an apprehension, our alarm is well grounded. If the study of English history is to be substituted for the study how to take off shoes to honor shahebs, if the reading of philosophy is to be given up for learning the art of salaaming, if the establishment of a Vernacular University would mean such a thing as the above, who would not shudder at its idea? And there are many an official who means such a Vernacular University!

But suppose a University were to be established in which the standard of knowledge to be imparted should be the same as in the existing Universities now, but that the general medium be the native languages; suppose our boys studying Gibbon, Hume, Hallm, Grote, and Neihbur in Bengali; suppose them to pursue the study of nature up to a high point above or a profound depth below unhampered by the difficulties of a foreign language; suppose them gaining the same mastery over the mathematical scienes as a part of their education as they do now; suppose them having Hamilton to lecture in a vernacular language and Reid philosophise in the same tongue; over and above these suppose them to have become intimate with our ancient Hindoo thinkers and writers many of them by no means inferior to the leaders of the scientfic and literary world of the modern civilized countries, and also fancy them to have tasted in full measure the beauties of Kali Das, Bhababhooti and the rest. Were our boys to come out of the University as B. A's, M. A's and the rest with knowledge of the above description would they in any way be inferior to our present B. A's and M A's? On the contrary they would be assuredly ten times better than the latter. They would have their brains far more cool and healthy. They would have decidedly knowledge of a better quality in which the morbidness and difficulties of cramming without understanding would have had scarcely any place. They would be without that variety which is necessarily engendered in everything concealed from the view of the many by a screen such as a foreign language is. They would be without that conceit which is the result of knowledge being the monopoly of only few initiated in an uncouch tongue. They would after all only value knowledge at its own worth and confound its value with that of its garbs as is often done.

But then we would lose all chance of political improvement' would cry our friend of an opposite view. Then our rulers wont understand us, they wont value us. Then we would not advance in political progress. We hold the reverse. A change in the system of our education as we have proposed is not only calculated to promote our political improvement, but it is the only means of securing such improvement. I shall try to show this in a future article.

विख्वाशन।

পারিস রহস্য। (इंडेजिन अ्क्र जिडिंग जाव भावि स्मत

वाञ्चला अञ्चरान )

कांगाञ्चािमनो मजा इइएज छाजि मथारइ এক এক ফর্মা প্রকাশিত হ্ইতেছে। তক্তর मटलं शिल ১৮ नः ভवरन कार्याधरकत নিকট প্রাপ্তব্য । মূল্য ফর্মা প্রতি তার্দ্ধ বলে উক্ত স্থানে সংযোগ দিয়াছেন, তাহার নিগৃত তত্ত্ जान।।

#### गःवाम।

शांष्ट्र। इंश षांत्रा अक्वादित माए जाहे भंड (लाक्त्र थाना श्राष्ठा इरा। धरे कल ठाला हैएक जिन जन ली-(क्त्र णांवनाक। इडेएताल मक्नि रूज्य।

- मामर्थकारण "श्रामीन ऐन्नजिन एकि श्रिभन रहेशार्छ, आंगता তारात कित्रमः छेक् ज कित्रनामः—

व्यत्नकछिनि शिल्ली योग (मिश्रितां व्यागातित वहे मर-ऋषंत्र জिश्वाशोष्ट्र, व्यां जि कालि श्रेष्ट्री योष्ट्रिय अर्खाजीन छेत्रिङ इख्या वड़ किठिन। श्राट्यत मध्या बाक्रण अ कांश्राष्ट्रतां रे ध्वामा जार्गिनिया बीटिंग किन्छ जोश्रामिद्रशंत क्रमणः बी शुम श्हेरक्ष । भूटर्स बांक्षन उ कां श्रञ्चा मित्र व्यर्था शरमत य छे भाग हिल, जा हा ककी रहेशांट्य। हिन्तू भाषा क्रकारतता अमन जम जुडतां भ সমাজ বন্ধন করিয়া গিয়াছিলেন যে, ব্রাহ্মণকে কিছু না দিয়া কেছ কিছ, করিতে পারিতেন না। ভাহাতে ব্রাক্ষণ मिटगंत अञ्हल्म ठलिछ। शृत्सं ज्वा मामग्री ज्वलङ मूला जिल, তाराउ जारा मिरात यक्ट्रम की रनगाव। নির্কাহের অন্যতর কারণ। প্রকার বাদাণদিগের ভোগ লালসাও বলবতो ছিল না। এখন উহার বিল-क्षण देवलक्षणा घष्टिया ছে। এখন निजा निकि किया কলাপ বিলুপ্তপ্রায় হইয়। আদিয়াছে, দ্রব্য গোমগ্রী অতিশয় মহার্ছা হইয়াছে, ভোগবাসনাও আত্তান্তিক व्यवल इइत्राष्ट्र। मर्था ठाकती वर्थाशरमत देशात्र छु इया यादाता अक उड़ इह्या ठाकती करतन, डाँदाता म बाद का है। शिष्या ए । अथन आप अक मूथ नय। এখন চাকরীর সহজ্র ২ অর্থী হইয়াছে। এক জাতিতেও की अर्थिका निवक्त नश। हिन्तू, यूमलयान, श्रुकान मक-लिइ छाकती छाकती करिया जार्जनाम किरिएटह्न। शवर्ग মেণ্ট এত চাকরী কোখায় পাইবেন যে, সকলের ক্ষুধা भाषि क्रितिन। दङ्काल इहेल, देवभा ७ क्रिश জांडि এদেশ হইতে অন্তহিত হইয়াছে। কায়স্থ্রো ক্রিয় বৈশ্য ও পুদ্র এই তিন জাতির রতি একচেটিয়া করিয়া লইয়াছিলেন। তাহাতে তাহাদিগের জীবিকার অস- স্ত্রী কার্যো ব্যাপৃত ছিল, সে একখান অস্ত্র লইয়া তাহাকে क्ट्रल हिल न। जक्ता इश्वांक क्रांडि ड्रांशियावड - অরে হলা হইয়াছেন। স্তরাং ভাঁহাদিগের জীবিকা আর স্লভ নয়। এই সকল কারণে আমরা দেখিতে পাইতেছি, প্রামের মধ্যে যে সকল ব্রাহ্মণ ও কারস্থের শীব্র ফাসী দেও, সংসার আমার নিকট অরণ্য, আমি উচ্চ চাকরী ও কিছু সঙ্গতি আছে, ভাঁহারাই य किছू यथी, किछ डाँशिनिंदांत जात आि जाला। अंदिगत अधिकारण जामान उकांश्रहत अवस्था मन्त्र। शांवर ইছারা চাক্রীর আশা পরিত্যাগ করিয়া অন্যান্য কার্য্যে প্রত্ত না হইতেছেন, তাবৎ ইহাদিগের স্থ সকলে रहेवां व मछावनां नाहे।

— म ज वत्लम, बिशंज मश्चांदश श्चांतम् (ङ्शां निवामी बीबुङ वांचू जीननाथ পालिङ नामक জ निक मञ्चा छ छ সাঘিদান ব্যক্তির তনয়া পিতৃ-গৃহ পরিত্যাগ প্রক

थ खेधर्म व्यवलवन कतिवात मानतम (इष्या खीनतमा)ल विमानित्य व्यवश्वान कतिर्दिष्ट्न। এই खीलांकिषीय वयम ১৭। ১৮ वरमत इङ्खा देनि शिष्ठांत धक्यां कना ञ्चत्रां ठाँकात वर जामत्तत धन। इनि लिनवां वञ्चा মাতৃভাষায় রীতিমত শিক্ষা লাভ করিয়া যথাসময়ে এক मৎপাতের দহিত পরিণয় স্তে আবদ্ধ হইয়াছিলেন। इर्डाभावभावः करमक माम भाव रहेन कमाणि विधया দশায় শতিত হইয়াছে। তিনি কাহার কুহক মন্ত্রের জানিতে আমাদিগোর অভিলাষ রহিল।

— इसोत्र ( तक्रल ( तल अर श काम्भानी त अकथानि জাহাজ সেরাজগাঞ্জে বজাহত হইয়া প্রায় এক লক্ষ छोका क्वि इइयाट्य।

— व्याधार्य मति नामक अक जन तमनाभि जिल्लो प लागाইয়। পরে লাতে অপরিমিত সুরাপান করেন। প্রাতে বিছানায় ভাঁহার মৃত দেহ পাওয়া যায়। উষ্ণ দেশে সুরাপানে কি ভ্রানক ঘটনা ঘটে।

—ইতিয়ান মিরার একটী ভয়ঙ্কর জীহত্যার বিবরণ প্রকাশ করিয়াছেন। নবীন চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায় নামক এক ব্যক্তি তারকেশ্বরের নিকট যোলা প্রামে বিবাহ कदब। नवीदनं निष्कं दिश्व वाशीय याक्ष ना शाकाद खीरक छोश्रंत्र शिखां लए त्र त्राथिय। ( प्र । विन किल-কাতায় কর্ম করিত এবং মধ্যে ২ শৃশুর বানী যাইত। সে করেন। একবার শশুরবাটী গিয়া স্ত্রীর চরিত্র সম্বান্ধ শুনিতে পায়। গোপনে এই বিষয় অনুসন্ধান করিবার निभिज नवीन किनकां जांश कित्रियां जांभियां कर्यकें फिरनत ছুটী লইয়া হঠাৎ শশুরবাটী এক দিন উপস্থিত হয়। উপস্থিত হইয়া দেখে তাহার শাশুড়ী ও স্ত্রী বাটীতে नाई। জिज्ञामा कतितल जाशांक वला श्रा (य, जाशांत खीत बाग्यर रुष्तांट म जात्रकश्रात यार्षास्त निक्छे इइएक छेष्य आनिएक शिशाएए। नवीन इशएक मत्मर्कित्रा जात्रकश्रात्र मिन्द्र यात्र, किन्छ मिथात्न তাহার জীকে দেখিতে পায় না। শ্বভারবাটী ফিরিয়া আদিবার সময় পথে একজন ইতর শ্রেণীর লোক তাহাকে ৰলে যে, মোহন্ত তাহার স্ত্রীকে ভ্রম্ভা করি-য়াছে এবং তাহার শ্বশুর শ্বাশুড়ী ধনলোতে এই গাহিত कार्या नमां ि मिशार्छ। किছू कोन शरत जारात खी अ নিকট সমুদায় দোষ স্বীকার করিয়া বলিল যে, তাহার পিতা মাতার প্রলোভনে সে এই কার্য্যে প্রয়ত্ত হই-शांट्य। नबीन जादांक कलिकाजांश लदेशा याद्वांत প্রস্তাৰ করিলে সে তাহাতে সর্মত হইল। কিন্তু নবীনের श्रुख श्रीखड़ी वह कथा खिनिय़ा (भाद्या स्वरक मंश्रीफ फिला। भाशास्त्र विनयां भाषाय (य, तम नवीतनव स्त्री लहेशा या ध्यांत मगय भथ इहेट खीक का फिया आ बिदा। नवीन এই विপरि ज्ञाविया जात किছू ना পाইया जारात खीरक धकरी शृश्कर्य कतिएक विलल, धवश यथन जाश्त षिथे कित्रिश कित्रिश किलिल। खीरक इंडा। कित्रिश नवीन व्यक्तिय गृह इहेट बाहित इहेगा छ्धलीत छाहेले मोजियो एवे निक्छे छेथां इंड इंड्रा विलल "আমাকে আমার স্ত্রীর সহিত প্রলোকে সাক্ষাৎ করিবার জন্য वाधीत इरेग्ना हि।" इगली उ वर्धन वरे मकर्ममा हिल-তেছে। মোহান্ত এবং জীর পিতামাতা ধ ত হইয়াছে।

— (वाश्वाहेत य প্রায় শিচ্ত উপলক্ষে যজ্জের বিষয় वागता शृद्ध 'डेट्सथ कति, जशां ७३,००० व्या, ৫००० मन घुड, ৫००० मन मला, ५००० मध्, ५००० मन् हिनि ' अव १ इंक्क् मिट अस आ छ जि श्राना करा १ इहेरव । व्हें अथ असे य मिना व या श्राप्त इशाक्य था दि

किलायगं वका कितिया चिटिला लहेया गियाट् ।

— काबुदल जक जन योनियो जहेन नाम कतिया (मय (य, नियात जालि श्रेष्टीन धर्म ज्वल वन कतियाद इन धवर ध र्वे निमिछ প্रজानिगदक विद्वाही श्हेट वालन। मश्र्वि छेक योलवी शाक्डा পড়িয়াছিল এবং দের আলি ভোগ দ্বারা ভাহাকে উ छा इ या निया हिन ।

चुशारलं रवश्य धकडी श्रिमिष खी लाक। ডिউक व्यव विष्नवता यथन किलका जारा वारामन करतन ज्थन (वराम जाशनात मङ्गी लह्या এখানে छेशिष्ड्ड इन । इनि इछेदबानीय खीमिटगत नाय स्थानीन ভাবে প্রকাশ্য ऋलে গ্রমণ গ্রম করেন এবং কলি-कां जाय (मवातं जागता जातक श्राकाना जात जां राज जां राज व्यवत्नांकन क्रि। जिनि প্রতাহ কি ক্রেন তাহার वार्थाए मकाल इहेट जिनि २ छ। शर्याख कान्य वाशासन कदतन, ठिए। इहेट ११छ। शर्माख है १ ता जि शार्थ करतन, ১১ इइटेड २ छो शर्याङ जिनि विद्याम करतन। इरें छे इरें ठातिया भर्गा वाक कार्ग करतन। ভাহার পর স্চের কাজ শিক্ষা ও অন্যান্য কাজ

-- (या या हेट जा विषे ना यक अक जन मारहरवत षि शेश शक्तत खीत धकि कन्। थारक। मार्ट्यत खी गा. एछ एछे निक्छे जामिया लालिम करत ষে, ভাহার স্বাদী কন্যাকে ভাহার অনভিনতে जाशंत निकि इइटिं लहेंग नियाद्य व्यव जाशाद्य जिको कित्रशेट्छ। कनाति निकरे गाजिएकरे জिखामा कताय मि वल्ल (य, मि जाशन हेक्स्य তাহার मঙ্গে গিয়াছে এবং মকর্দ্মা ডিদ্মিস হয়। माद्शिष्टि इंजिश्दर्स इंत्यत्म्भक्षेत्री क्रांक क्रिंडिंग

—रेक्षोत्रम (तन्न (तन अद्य (कान्नानी (वन घद कण्णेना कति उड्डन ।

— जोत ज दर्धत यदश (वोत्राहेट्यत (लोटकता (ययन मारहरी तीजिनीजि अवलवन कि विद्यारहन, अमन आत. कांशांश नय। त्मथानकांत भातमीता आवांत मक-लित (চয়ে বাড়েন। একটী ভদ্রলোক কোন পারসী यू वादक धक थानि शख (ल ८ थन। निवाद वाना या या अ वा क्यांशात मिलिंड हिल ना। भातमी यूवक इंश দেখিয়া অভান্ত রাগানিত হইর। পতা গ্রহণ করিলেন ना ध्वर शर् छ । जित्र निश्ता मिर्लिन य भा वा (का सात व्यवभा निथि इइ दि ।

— চীনের রাজা এক দিন নগর ভামণে বাহির इहेगा (परथम य तांछा मकल जनमाना जवर गृह मकल घांत्रक्का। यद्वी फिगटक हेरात कांत्र জिखामा कतिल जाशीत। विलिलन य भार्कार तां जाता वाहिएत वानिएन नुगत वानीएनत उंशिहाएनत ग दिं দেখিবার অধিকার ছিল না, এই জন্য তাহারা ताज मर्गन कतिएउए ना। इशए जाजा विलाल य नगत वामीदमत जाशांक ना मर्मन कतात क्यांन कातन नारे। जाजात প্रजागगरनत मगग्न नगरतं ताखा मकल जनाकीर्नश्याष्ट्रि ।

—याशाता वर् विवाह करत्र डाहाता मावशान! वाश्वाहेत्य अकजन हिन्द् जाशत अक खीटक जतन लग-यन क्तिए अधीकात क्ता वि निमिन् जारात नारम्

কি হয়। গে আপত্তি করে যে, ভাহার আরে দেহ ছিল ভিল হইয়া ইডজেডঃ পতিত হইল। বিয়ালি গোছ, যে হয় লোভের ন্যার পড়িবে, নভুবা षाधीश कित्रा किला शिंड जाएमण करिया एक स्व जिसिक यक्षमांत्र थत्रा भाका होका छ जास्त त्रजाक खीरक मानिक भगत होका फिर्ड इहेर्य।

्यायाशात अकलन मुननमात्नत छी अहोन হইয়া তাহার স্বামীকে পারিভাগে করিয়া যায়। মুসল-मान जाशादक जाता घत जानियात निमिन विस्त ने क्रिस किस खीरनों कि क्या श ज एक श अ कदन गा। जावद भरिष जात्याशात जिल्ला कि गुनम्मान नालिश करत धवर विषात्रशिक जोशाह मंदक श्रेम धार्मादर्थ आरम्भ मिन। स्रोमी उक्त ोलांकि इंश्वं विष्धः वाशील कर्ता किन्न शित्न उ जिंदज तां य वश्न तिश्याद्य य मन-ान जार्ति खोत श्रामात श्राजि रख एक कति। शांतिद्व न।।

— এक वाङ्कि निधियाद्य, जामाद्य এकत्रथ । दिवार अ अग्रयदात तीं छि छान् चार्ह, म् अवश्व विविध विक्रिया इस मा, अथात्म वाला विविध् ्रांचित्र के हो। खोल्गाकिनिश्चित्र ३७१३१ वर्मदत्र गानि थात्रः विकार स्य ना। श्विनाम ज थ्या हेल्त उत्त छेख्य मन्थ पार्यत यरशाई श्रीतिज्ञाह्य। धर्था-ात खोल्लारकता थात्र जलकातथातिशान करत ना, व वरे जकलगढक वरे जकशाना यदमायाना देशना शति (प्रथा-यास । जागादनत (प्रदेश मधना बैलादिकता जानश्कात भाना इरख थाकिए (यंगन गजनका यान करत हेशांता मिलिश करत ना, वता हेश ग्रद्धा २८७ जनश्कात शता जक्छ। निन्मात कार्धा या गना इस, किन्नु खी शूक्य छिन्सरक धिक्राक अब कुल कदर्न मिटल दिशा यात्र।

- भारानियात्र । এक वाकि निथियाद इनः — या-ानात लाठेक वर्णत व्ययनातक लिथ अ शुक्वीया ाशाही। मदश्र माइम अ दिनहिक वदन विषय खावन क्त्रंश थाकित्व। शाश्राशिनत्व महावादज्य এक जन मिशरी ताखास यारेट जिल्ला, जारात प्रहेि छ। का श्राथ शिष्या याय । तम शाजन आदिन निर्नेस क- कित्रिण शासि ना। রিভে না পারিয়া ইভডভঃ অম্বেদ করিভে আরম্ভ करा, जमर्भान जात अक जन मिथारी कातन जिल्लामा कराए थथम मिथाशै श कुछ छेख् मान क्रिला । छे शहारमत ছ लिहे इछेक, वा जाना कात महा मंत्र, जामि धरे मन वर्मात्रत शाना कमल . (वं इंडिक, जानत मिनारी जारादण कानप्रता विद्या पूर्वक मिथिया प्रकृति विवय छित भारेशाहि। ध्वकि कि विका कि इल । उन्हें बदन श्रथम मिथा-शैत (काधानन थड्डिनिज र्रमा डिरिन, किन् তৎकाल जारात रख अख ना शाकाट ल त्यो-नावलकी इहेश। तिङ्ल। शतिष्वम श्रेष्ट्राय मन्वस इहेशा यथन (म जाशनात कर्डवा ताज कार्या या इंटिंगि, भिरं नगर्य भिष्य गर्था जार्था जार्था मिन माकार इउगाउँ निशाही डाहादक छन्नि भिन्दी जाहात ज्यान मश्हात कतिन । जनस्त इन्।काती मिथारी शुं इरेल, विठादा जाशादक काशादा ऐछाइस। मिवास बायशा इहेल। व्यथसाधी जिलाही निक माइटमत शतिष्ठ मानार्थ खन्न जिल्ला मध्यत्ति इहेग्रा मधूरथ श्रीय वक्षः विखात कतिया (तार्थन कता यात्र ना, धारः याहा देवनाथ मात्र नूना हत शक्त यंत्रक प्रधायान इहेगा व्यक्ति श्रामन कतिर्ड वार्यन कतिल। धक ग्रह्डित ग्राम मिलाहीत

शिष्टाम वर्श स्थोष्ट्रिया एवं। किमग्रात अखाषे जाशादक यहा श्रमाय अ व्यागरत गार्ड मुखानन করিয়াছেন

न कता मीम माथावन उस अवन्यालिक मजाभाव थियाम कर्म পরিভাগ করিয়াছেন। তাহার হলে जुजश्रक (मनाशिज गार्जन गाक्तगङ्ग नियुक इर्बाएक्न ।

## পতা প্রেরকের প্রাত্থ

कमाहिৎ পाठकमा, इश्छितिया। नाटिशेत अश्रदलत क लित एकः इन्टल्लक हैन शानी वार्त महस्क वलन यं, शर्द भावी वार् यथन जनकाल हिलन, जथन লোকে ভাঁছার প্রতি অত্যন্ত বিরক্ত ছিল। এমন কি রাজ। চলমাথ রায় ভাহার বিকল্পে একবার ইনস্পো-क छेत्र कि लिए थन। भागती वातू छाना छ ति छ इहेश। छि-লেন, পুনরায় তিনি আসিতেছেন কেন? শিকা বিভা-গের কর্মচারীদের লোকের বিরাগভাজন হত্যা অনিফকর।

बीय – मार्ट्शा जाश्यात शब थकान प्राता এক ব্যক্তির মনোবেদনা দেওয়া হয় মাত্র, সাধারণের কোন উপকার হয় না।

वांग्र (संन मचक्रीय (य कय़ी श्रम वांगापत (श्रिज শুডেল প্রকাশিত হয়, নানা স্থান হইতে তাহার উত্তর वामिशाष्ट्र। श्राप्तत जल्लाजा ज्या व्यापता हेज विषय घष्टि गर्माय পতा প্রকাশ করিতে পারিলাম न।। পত मकल ध्रम कर्छ। यहा नग्र गालित निक छ ध्रिति छ इरेल!

## कालीक्य मिश्इ—(वड्राला

वागता हेश्त्राकी खरख थ्यात्रिक शज शक्त कात्र ना। निश्वि थ्यञ्चावि वाञ्चनात्र निश्ति भाषाहेल देश पत्र काश्तव कथा खनितन ना। जामाम विख्यात्र প্রকাশ করিতে আমাদের আপতি নাই।

থিয়েটর হিন্দু খাশখাল থিয়েটরের খায় প্রতিষ্ঠা লাভ क्तिएक शार्त्रम नाइ।

কালনা -- আপনার ওরপ পত্র আমরা প্রকাশ

## প্রোরত।

### क्रिय।

व्यामन, अ व्यादिश इहे थानाहे धक वरमदा जान हत ना। यिवांत आफेंग धाना जाल इय मिवांत जामन मन ! इइन्त. मादन कि! नेश्व कि क्रश्रा वामादम्य घटत अधिक धाना आहेतन कि नेश्रंत प्रशिष्ठ हन ? उप्रान्त नय। जाख পড়িয়া যায়, আর তাহাও না হয় চার। ওলি হরিছা वर्ग इत्र । बावनं माटम व्यक्ति ना इहेटन वाल भारनत उठ का जि इश नो, कि छ। इन्हा वाश्वन शान याह जारा खक रहेशा यांश।

পাঁচটী জ্রীকৈ প্রভিন্নাল করিছে হয়। এই আণত্তি শার্নার আধিপতি করিয়ার রণজধানী দেণ্ট- প্রকেরারে বন্ধ হইরা যাইরে। এই সময় কি ইছার শি-মিত কিছু সতক হওয়া উচিত নহে? আর কত দিন এরপ मध्भंग जिए जिन्न योशन कर्ता योग। अनगूनार्यय छेशांव शंबर्गरमणे कि दम्मी कि इदियम, एम्ट्रांब द्यांदिक क्या कर्छवा। शर्वारपटित धक्छी कर्य क्रा व्यावनाक छ छेशाउँ जिनि ध्येवर्छ इहेशा छन। थान थनन कर्।। আর দেবতার উপর সম্পূর্ণরপে নির্ভর করিয়া থাকা কর্তব্য নগ্র আপাততঃ বদ্ধান, বাকুড়া, বীরভ্ম, প্রভ,তি ভাবে যে সকল সিঞ্চন কল আছে, তাহাই वशादन थान्ति बहेदन यदनक काटन नारा। यजिनन আর ভাল কল না পাওয়া যায় ততদিন ইহার দ্বারাই **চ**लिद्व।

यात्र धक्षी छेथात्र पाट्ड, इंश किमिनात्र, डानूकनात्र मश्कन थां ज्ञा ज्ञाशास्त्र गत्न क्रिल क्रिड शोदबन। त्थां प्रति कान थकिनि क्रा। मक्न (मर्भ ত ए तन द श्रांत शांध मन हो म इहेट ए जान वक किन कोल जामतः यिन् अधिकवादित ज्लुल शित्रजाशं ना किति रेश जात्थको य जिथिक श्रिमाणि श्रीम ग्रावश्त क्रिन जोशंत्र मत्मर नारे। त्याश्वय अत्मत्न जाजि छेख्य रशं था छेखम इम (य, ठामादा वीज शाहित्न, जाद शाबद छे९भां जा भाकित्ल जा जिया या जा मिहा देशा कमल कदत्र। धक्करण वांगारमञ्जू इहे ही कमतन्त्र छे शत्र निर्ध्व वार्था वार्थ उ वामन शाना, शांध म চलिত इहेटल जिन्ही कमल इहेरव अ मञ्च द्वांत छत्र जातभा हेश जारशका किছ किंगिदक। विद्यायण्ड थार्मित जिमिए द्याय जान इत

## वांमाभीय डाया।

व्याचामिदशंत त्नभिद्धनिष्ठे श्वनंत माद्द्व यद्श-कियमनत माद्य मदशान्य यथार्थ (मन्न विदेखनी इरेशा कडकछिल छोक! बामो लिट्थन (य, छाकांय्र शानशान | आमाशीय छावात विक्या य दिएगाँ भाषाईया-हिटलन, जाशटज्य कान कल फिल्ला ना। जामाय-वामीता (मदम याञ्जाया প্রচলিত হউক বলিয়া शार्थनां कितिदलन, जागिन माद्य यद्याप्य र जामाद्य व्यामाभीय ভाषा প্রচলিত হউক'' এরপ অনুমতি थामान कितिदलन।

लिशहेदन हो भवर्गत मार्ट्य शास्त्र शंक्ड यक्ष त्वां व्यक्ति कृषिभाज कतित्वम ना, जामाय (यत्नभ শিক্ষার প্রথা প্রতিত হইল, যদি এরপ প্রথা श्वित अश्विया वाय, जाश इहेटल अस्थ श्वित आप्त व्यधिक काल विलय नारे। (मटला व्यधिकार्भ दिना-(कई यमि ध्वकाता खरत व्याभिक ति इन, जारा इरेल विजयान जाक रेनिकक नियरमत अकित अंशान जान, थाना जिथक्छ नीत्रम जिथि इहेश। शांक, जामन लिश ऐकिन शंक्नित माहित महामहात रहे सुन्त शांना स्मिटिन जिमित् इता गूड्यांश जिसक द्वीक इहेला, । जान जी शांतन कतिन, जोहांत मत्निह नाहे। जामादात আশু ধান্যের তত ক্ষতি হয় না, আমনের সর্মনাশ হয়। রাজ প্রতিনিধি সাহেব মহালয় উচ্চার এই অভি-আধার অধিক রি ফি হইলে আমনের তত ক্ষতি হয় না প্রায়টি বন্ধ দেলীয় দিগের মন্তকোপরি স্থাপন কিন্তু আশু ধান্যে হয় পোকা ধরে নতুবা উহা মৃতিকায় করিবার ইচ্ছা করিয়া ছিলেন, কিন্তু সম্পূণ রূপে क जिकारा इरेट ना शाहिया जामादम निएक श कतियादिन। ईश् अवभा जीकात कतिए इहेर्व त्य (ननी स जाया स स्वतं अभ किने किने कि हो हो हो हो । मिनीय मश्याम शास्त्र जाकरेगिकिक विरह मकल धर्थनकां व कारन मिर्गत धक रूडन डाव इदेशाइ। विस्थारका आरमाहित मा इरेटन कथने रे मिर्गत अधि वरगतर ममस्तात ज्ञा वृचि ध्रम जिनिक्ठ । या कारण तिवाक जोकि विक्रिया वृचिद्व किना जायतः

वृतिए भाति ना। जामागीय जायाय जिया कि कि इहेटल कि (मनोय मगछ लाक এज्ञा स्विनिक्ठ इहेशा छेठि-(वन (व, ভাহারা রাজনৈতিক বিষয় সমুদায় বুঝিতে र्शन कित्रिं अञ्चार्ताथ करतन धवश डैं। शिक्तित पिर्णत প্রাচলিত শব্জলি (যাহা আসামীয় ভাষায় মিপ্রিভ इहेश পড়িয়াছে) এক একটা করিয়া পরিত্যাগ করিতে আসামবাদীদিগের অনুরোধ করেন, তাহা কটক জেলার স্কুলবাদী নির্মানের দাতব্য रहेल आत आगाशीय जायात कि थाकित। कडक-खना तए भक्त व्यविषये श्वाकित्व, व्यात कि कूरे थाकित्व मारे भ्यां व्यविष्ठ व्यात्र व्याति व्यापीन ना, धथन आंत जूजन अक्त त्राना कि जूजन अक প্রস্তুত করিয়া দেশের উন্নতি করিবার দিন নাই?

व्यामाध्य क्य জन इंश्तां जी शिष्टि ए इन ! वऋ दिन्द्रभा अभावकत्। शर्फ शांठ जन इंश्तां जी निथिए उहा किना मत्मा । इहे छाति जन हेश्ता जी শিখিলেই कि मगछ पिलात गक्न माधि इहरद? তবে यদि कालে দেশের সমুদায় লোকে इंश्ताजी পডিয়া পণ্ডিত হইতে পারেন, তাহা হইলে উন্নতি পারে। এরপ আশায় যাহারা থা-किटवन, डाँश्ताई (मट्लंत यथाथ लक्।

वक्र (मणीय ल्लारकता धथन छाङ्गितितात छा-চার, ব্যবহার, রীতি নীতি সমুদায় প্রত্যপ্ণ করিতে श्राः ज्ञाशं क्रिंडिए । वन प्रभीय ल्लाक निगदक यथन তाँ श्रा भक् विनय। यदन कदतन, তাহাদিগকে দেশ হইতে তাডাইয়া দিতে পারিলেই (मट्मंत श्रंक यक्षल इरेर्व, यथन लांकित निकरि এরপ বলিয়া বেড়ান, তখন অবশাই ভাহাদিগের तीं निकि ममूमाय প্राज्ञिन कतिर्वन। প্राज्ञिन कतित्व आंत कि शांकित्व ? अञ्चल आंत अकि कथा ना विलिया कांख थाकिएं भाविलांग ना। शाशि शश्य लात वानकिपरगत अकि मिं আছে; প্রতি শনিবার তাহার অধিবেশন হয়। এত-ष्मिणीय धकजन भिक्क जाशाका। धइ मङाएं गएषा २ ध्रांश विषय लहेशां उ उर्क विज्क छिशिष्ठिङ इहेशा थारक या, जागता वाक्रला कथा दलिव ना, वक्र पिनीय लाक पिरात महिज याश দিব না, তাহাদিগোর ন্যায় বস্ত্র পরিষান করিব না; ভাষাদের মত আখারাদিও করিন না। জাতীয় ঈর্ষাও রীতি নীতির বিভিন্নতাই যে আমাদি-(भात व्यश्वावात व्यथान कात्रन, व्यथाक महाभाग বোধ করি তাহা জানেন না। (शाहाडी जामाग) একান্ত ৰশাস্দ

यशियामत्ल्य बांकांब मान।

-3

মহাশয়,

38३ (म 3४१०

गहियानलाधिशि बियुक लकान श्रमान शर्शत य সমুদায় সৎকার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়াছেন, তাহার তালিকা নিয়ে প্রকটিত হইল। ইছার বার্ষিক আয় প্রায় তিন लक होका। श्वर्वायणे (य, इंशांदक दक्न ब्रांका छेशाधि थानान करतन ना, जामता तुतिए ।

9000

यमनी शुद्धत शहे जुदन का का करा

তमलूक कुल ডिएम्श्रनमात्रित्र माठवा वार्षिक 340 মহিষাদল স্কুলের বার্ষিক দাতব্য 2800 मिश्यामन ডिएम्श्रनमात्रित वार्थिक माठवा ५१०० महिशामतलात्र अर्था मालात অতিথিগণের বাধি ক নগদ খোরাকী

य मकल অতিথি ইত্যাদি আগান্তক ব্যক্তিগণ হস্তে পাক না করিয়া দেবতার প্রসাদ (প্রস্তুত অন্য) আহার করেন, তাহাদের জন্য স্থাপিত দেবালয় সমূহের

জেলা মেদনীপুরের স্কুল বাজার হইতে টিড়িমার নির্মানের জন্ম দাতব্য পাশকুড়ার স্কুলের বাষি ক দাতব্য 320

গেড়াখালির ক্লের বার্ষিক দাতব্য ফেরিফভের রাস্তা যাহা কাথি পর্য্যন্ত প্রস্তুত হই-श्राष्ट्र, जमस्या छेख्त्र मीमा घाष्टे उ मिक्किन मीमा ब्रोक्स-পুর পর্যান্ত আমাদের জমিদারি অরঙ্গা নগার পরগণার গ্রাম সকলের সাধারণের গমনাগমনের স্থবিধা জন্য তাহার যে ভূমি উপরোক্ত রাস্তা গত হইয়াছে তজ্জন্য নিদ্ধারিত মূল্য যাহাদান করা হইয়াছে তাহার ञातूरमञ्ज म ला

এত घा जी ज महिया न जिए न्या न मात्रित का न जिल्ली পোক্তা বাটী প্রস্তুত করাইতে দান করা হইয়াছে তমলুক স্কুলের বিলডিং তৈয়ারি জন্ম দান योखां इर्डिक मयर मान

সর্বদাধারণের উপকারার্থে গেড়েখালির মূত্র পুষ্ণরিণী মায় পোক্তা ঘাট তৈয়ারির খরচ ১৭০০ त्रागीशंक्ष नामक वाजात स्थान ए ज्थात प्रहेति श्रक्तिगी थनत्न म्न

সর্বসাধারণের হিতার্থে মহিষাদল রাজধানীর নিকট বাকার খালে পোক্ত পুল তৈয়ারির খরচ মায় পুষ্করিণী 35000

र्थ श्रेल इइएक शिन्छम मिक्किन जत्रक मर्स्यमार्थात्रान्त গামনা থামনের জন্য কাঁচা রাস্তা তৈয়ারির খরচ ১৭০০ কাঁথিতে ছর্ভিক্ষ হওয়ায় দাতব্য ধাত্য ৫৩০ মোন

ভাটপাড়া, নবদ্বীপ, ত্রিবেণী ও বংশবাদী প্রভৃতির छ जुम्मा छीत्र ছा जिमिर शत ज्यू गरिमा घर्मा विश्वा ज्यू । পক্ষণকে বার্ষিক ধান্ত রতি দেওয়া হয়।

> বিজ্ঞাপন गांशवरगाहिनौ।

छेशद तत्र निथि व गांश्व यांश्व ना गांगक थात्यत कारा। ७०० शत्वत्र जिथिक। होका डाक्याञ्च २० जाना।

উপরের গৃন্থ কলিকাতার চিৎপুর রোডের ৩৩৬ নং ভবনে জীকিশোর মোহন (घांदशत निकंडे छा। १।

वल्गीकि त्रायायदात वाञ्चला गए। जन्नाम। छेखत है। लि छिन्न छि घाषाद्वाछ जामात ১०७ नः जवरन मश्क, ज कार्लिङ त क देनक छाज बीयुक्त शक्षा शाविन छ द्वां ठार्या महाभय ४० পৃষ্ঠা করিয়া পুস্তকাকারে প্রতি মাসে এক এক পরিতোষ লাভ করিয়াছেন। বাধিক অগ্রিম युना ए॥॰ छोका यांव छोक यांकन महिल भइ-(शब्द शंभे नाम शंभ मह जामात नादम शंव निशिद्य शाहेट शांति वन हे जि। बीक्षाविष्ण मण्या

विद्निष विद्वाशना

এতদারা পুস্তক ও পত্তিকা প্রতি शर विक निक निक वा प्रार्थना (य. यो इकिता व त्रिकं मर्खकन जामत्रभीय धान्यापि जामाणि অত্র পাঠ্য সভায় গৃহীত হয় নাই তাঁহারী অনুগ্রহ প্রকাশিয়া তাবৎ থাত ল্যুহের থেক এক খণ্ড নিম স্বাক্ষরকারীর নিকট প্রেরণ कतिशा वाधिक कतिर्वन। मत्नानीक इहेरल বাৎসরিক অন্ন ভোগের খরচ ১১৫০০ [দাতব্য ব্যতীত] অনতিবিলম্বে পরে প্রেরণ कदिव ।

नष् इल, ४३ े जार्छ, 3२४° माल।

बीदविधियां धव शिव । निष्टिल नां भारत शार्थ সভার সম্পাদক।

(ङला यरमाइत नडाईल।

বঙ্গভাষায় রোগ-বিচার ও ভেতিক নির্গ তত্ত। गृशी गांदबत्र ब्लांबना भानी भिका প্রভৃতি প্রবেগতা এবং বেলনি মডিকাল ङन्गान अर्थाए हिकिएमा पर्शन अञ्चिकात সম্পাদক ডাক্তার যত্নাথ মুখানাম ক্রত উপরিউক্ত পুস্তক প্রকাশিত ইইয়াছে। উ-श्रंत क त्लिवत ৮ (शिक्षि कश्रांत ७७० अर्था, गुला ७ एकिंगाराल ॥० जाना॥ ऐश्व वाकाई जि পোক্ত এবং সুন্দর। চুচ্ডায় এন্থকভার निक छे धावर क लिको छ। लाल वाङ । त रिन्यू इर खेरल वीयुक वांत्र ७ कमाम हिछा शाधारयव निकहे পাওয়া যায়। সাধারণের সুবিধার নিমিত था जी-भिकात यूला ७ होकात श्रांत श्रांत र्हा অবধারণ করা গেল। ইহার ডাকমাণ্ডল।/॰। डेक इरे ठिकानाग्न भाख्या यांग 83

# Advertisements.

(BEING ACT No. OF 1872.)

Notes consisting of copious apt extracts from Text Writers, numerous illustrative cases both Indian and English, appropriate quotations from the reports of the Select Committee and other sorts of explanatory

remarks and comments. INTO WICH IS INCORPORATED THE INDIAN EVIDENCE ACT AMEND-MENT ACT,

AND TO WHICH IS APPENDED THE INDIAN OATHS ACT.

KISHORI LAL SARKAR, M. A. B. L. Price Rs .4.

To be had at the Amrita Bazar Puttrika Office and Thacker Spink & Co's Library.

	* 28	18	575		
• তা ম	1 उ	वाङ	†ব	ST	ৱেক শ

	অথিম মূল্য।	
	কলিকাতার	भक्श यह ला इ
	া নিমিত্ত	নিখিত
বাষিক	\$10	), b
ষাণাু দিক	040	8110
ত্রৈমাসিক	21%	240
একথণ্ড	10	130
	অন্থিম মূল্য।	
বাষিক	bllo	3.
বিভ	ভাপন প্রকাশের মূল	71
	প্রতি পংক্তি	
श्रथम, मिजीर	্তা তৃতীয়বার	0/0
इजूर्थ उ उट्डाहि	কৰাৰ	/30.

विकाल किला वाका वास वत्नाभाषात्यव योन एर भार वांनी क्यु जिवाब बीठ छन्। थ बादबब बाबा छ